Cl – शमौन की सास तेज़ बुखार के कारण बिस्तर पर थीं मत्ती
८:१४-१७; मरकुस १:२९-३४; लूका ४:३८-४१ | 1

– Save This Page as a PDF–

शमौन की सास तेज़ बुखार के कारण बिस्तर पर थीं मत्ती ८:१४-१७; मरकुस १:२९-३४; लूका ४:३८-४१

खोदाई: यहां यीशु के उपचार की तुलना मरकुस १:२५ में उसके द्वारा दुष्टात्मा को बाहर निकालने से कैसे की जाती है? सब्त के दिन मसीहा ने किसे चंगा किया? यह जानना महत्वपूर्ण क्यों है? सूर्य अस्त होने के बाद प्रभु ने किसे ठीक किया? उसने कितनों को ठीक किया? आप उस दृश्य को कैसे चित्रित करते हैं? वह राक्षसों को चुप क्यों कराता है? लोग उसके पास क्यों आ रहे थे?

चिंतन: यदि आप भीड़ में होते, तो आप येशुआ से आपके लिए क्या उपचार करने के लिए कहते? हालाँकि, यदि आप उपचार के लिए प्रार्थना करते हैं और रब्बी शाऊल (दूसरा कुरिन्थियों १२:१-१०) की तरह, येशुआ ने आपको ठीक नहीं करने का फैसला किया है, तो आप कैसे प्रतिक्रिया देते हैं? क्या परमेश्वर आज भी चंगा करते हैं? किस हिसाब से? लोग, जाने-अनजाने, परमेश्वर का उपयोग कैसे करते हैं? आप क्या सोचते हैं वह इस बारे में क्या महसूस करता है? आप इसके बारे में क्या कर सकते हैं?

(देखें बीएस – मंदिर की पहली सफाई)। परन्तु जब
आराधनालय की सेवा समाप्त हो गई, तो यीशु पतरस के घर गया। यहूदी परंपरा के अनुसार मुख्य सब्त का भोजन आराधनालय की सेवा के तुरंत बाद, छठे घंटे में, यानी दोपहर बारह बजे होता है। जैसे ही वे आराधनालय से बाहर निकले, वे याकूब, यूहन्ना और बाकी प्रेरितों के साथ शमौन और अन्द्रियास के घर गए (मरकुस १:२९)। जब यीशु शमौन के घर में आया, तो उस ने पतरस की सास को बिस्तर पर लेटे हुए देखा। डॉक्टर लुका ने देखा कि वह तेज़ बुखार से पीड़ित थी। अपूर्ण काल का अर्थ है कि यह निरंतर था, अस्थायी नहीं।

और उन्होंने प्रभु से उसकी सहायता करने के लिए प्रार्थना की (मत्ती ८:१४; मरकुस १:३०; लूका ४:३८)। यह ध्यान देना बहुत महत्वपूर्ण है कि शमौन की सास थी क्योंकि

Cl – शमौन की सास तेज़ बुखार के कारण बिस्तर पर थीं मत्ती
८:१४-१७; मरकुस १:२९-३४; लूका ४:३८-४१ | 2

इसका मतलब है कि शमौन शादीशुदा था। यदि पतरस को पहला पोप माना जाता था, जैसा कि कैथोलिक चर्च का दावा है, तो उसने शादी क्यों की थी? तथ्य यह है कि पतरस शादीशुदा था, इसकी पुष्टि पॉल ने की है जब उसने कुरिन्थ में विश्वासियों को लिखा: क्या हमें अन्य प्रेरितों और पतरस की तरह एक विश्वास करने वाली पत्नी (यहाँ ग्रीक शब्द गुने है, या पत्नी, एडेलपे या बहन नहीं है) को अपने साथ ले जाने का अधिकार नहीं है (प्रथम कुरिन्थियों ९:५)? कैथोलिक चर्च सिखाता है कि यह शमौन की बहन थी।

ईसाई युग की पहली शताब्दियों के दौरान पादरी वर्ग को विवाह करने और परिवार बसाने की अनुमति थी। रोमन कैथोलिक चर्च में पुरोहिती के ब्रह्मचर्य का आदेश पोप ग्रेगरी VII द्वारा १०७९ में ईसा मसीह के समय के एक हजार साल से भी अधिक समय बाद दिया गया था। यीशु ने प्रेरितों के विवाह के विरुद्ध कोई नियम नहीं लगाया। इसके विपरीत, पतरस कम से कम पच्चीस वर्षों तक एक विवाहित व्यक्ति था और उसकी पत्नी उसकी मिशनरी यात्राओं पर उसके साथ जाती थी।

इसलिए, उस समय के एक बड़े हिस्से के दौरान पतरस एक विवाहित व्यक्ति थे, जिसके बारे में रोमन चर्च का कहना है कि वह रोम में पोप थे। लेकिन, वह कभी भी रोम में नहीं था (देखें Fx– इस चट्टान पर मैं अपना चर्च बनाऊंगा)। यदि रोमन चर्च में ब्रह्मचर्य को उचित रूप से स्थान दिया गया है, तो यह विश्वसनीय नहीं है कि मसीहा ने आधारशिला और प्रथम पोप के रूप में ऐसे व्यक्ति को चुना होगा जो विवाहित था। तथ्य यह है कि जब ईसा मसीह ने अपने चर्च की स्थापना की, तो उन्होंने ब्रह्मचर्य का बिल्कुल भी ध्यान नहीं रखा, बल्कि अपने प्रेरितिक महाविद्यालय के लिए विवाहित पुरुषों को चुना।

पतरस की सास बहुत बीमार थी और यीशु ने उसे ठीक किया। लेकिन प्रत्येक सुसमाचार लेखक अपने विशेष विषय के आधार पर इसे थोड़ा अलग तरीके से रिपोर्ट करता है। मत्ती यीशु को यहूदियों के राजा के रूप में प्रस्तुत करता है, और यहाँ राजा का एक स्पर्श ही उसे ठीक करने के लिए पर्याप्त है। यह मामूली बात नहीं थी कि चमत्कार करने वाले रब्बी ने उसके हाथ को छुआ और उसका बुखार उतर गया, और वह उठकर उसकी प्रतीक्षा करने लगी (मत्ती ८:१५)। तल्मूड की शिक्षा यह है कि एक पुरुष (और एक रब्बी से भी अधिक) को किसी महिला के हाथ से संपर्क नहीं करना चाहिए, यहां तक कि तब भी जब वह अपने हाथ से पैसे गिन रहा हो (ट्रैक्टेट बेराचोट ६१ए)।

मरकुस हमारे प्रभु को एक सेवक की भूमिका में प्रस्तुत करता है, और कहता है: इसलिए यीशु उसके पास गए, उसका हाथ पकड़ा और उसे ऊपर उठाने में मदद की। उसका बुखार उतर गया और वह उनकी सेवा करने लगी (मरकुस १:३१)। लुका यीशु को एक आदर्श व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है। तब उसने उस पर झुककर ज्वर को डाँटा, और वह उतर गया। लुका अकेले ही तत्काल परिवर्तन को नोटिस करता है ताकि वह सब्बाथ भोजन परोस सके। वह तुरन्त उठी और उनकी सेवा करने लगी (लूका ४:३९)। सेवा शब्द (ग्रीक: डायकोनी), हालांकि एक तकनीकी शब्द नहीं है, मसीह की सेवा के लिए नई वाचा में कहीं और उपयोग

Cl – शमौन की सास तेज़ बुखार के कारण बिस्तर पर थीं मत्ती
८:१४-१७; मरकुस १:२९-३४; लूका ४:३८-४१ | 3

किया जाता है (लूका ८:३, १७:८; प्रेरितों ६:२-४, १९:२२)। इलाज तत्काल होना चाहिए, जिससे पतरस की सास के लिए प्रभु और उनके साथ मौजूद लोगों के लिए भोजन पकाना संभव हो सके। लेकिन क्रिया अपूर्ण काल में है, जो प्रगतिशील क्रिया दर्शाती है। दूसरे शब्दों में, भोजन तैयार करने में कुछ समय लगा।

यह रिपोर्ट कि यीशु ने दुष्टात्माओं को निकाला था और बीमारों को ठीक किया था, तेजी से प्रसारित हुई। उस शाम सूर्यास्त के बाद, बहुत से बीमार और दुष्टात्माओं से ग्रस्त लोगों को उसके पास लाया गया। उस दिन सब्त का दिन था, जैसा कि इस तथ्य से प्रमाणित होता है कि उन्होंने आराधनालय छोड़ दिया था। सब्त सूर्यास्त के समय समाप्त हो गया, और इसलिए लोग अपने बीमार और राक्षस-ग्रस्त मित्रों और रिश्तेदारों को लाने के लिए स्वतंत्र थे। बाइबल बीमारी और दुष्टात्मा-आधिपत्य के बीच अंतर बताती है। कोई वासना का दानव नहीं है, या लोलुपता का दानव नहीं है, या यह का दानव नहीं है, या वह का दानव नहीं है। राक्षस कुछ बीमारियों में विशेषज्ञ नहीं होते। इसका कोई बाइबिल प्रमाण नहीं है। हम केवल मानवीय कमज़ोरी या ख़राब जीन के कारण बीमार हो सकते हैं। लाई गई क्रिया अपूर्ण है, निरंतर क्रिया का बोध कराती है। वे लोगों को लाते और लाते और लाते रहे।

सारा नगर द्वार पर एकत्र हो गया। कोई भी निराश होकर नहीं गया। महान चिकित्सक ने एक शब्द से आत्माओं को बाहर निकाल दिया, और हर एक पर हाथ रखकर सभी बीमारों को ठीक कर दिया (मत्ती ८:16; मरकुस १:३२-३४ए; लूका ४:४०)। यीशु ने शब्द या स्पर्श से चंगा किया, उसने तुरन्त चंगा किया, उसने जन्म से ही जैविक रोगों को चंगा किया (यूहन्ना ९:१-४१), और मृतकों को जिलाया (मरकुस ५:२१-४३; यूहन्ना ११:१-४४)। जो कोई भी आज उपचार का उपहार पाने का दावा करता है उसे भी ऐसा करने में सक्षम होना चाहिए। ये उपचार एक विशेष उद्देश्य के लिए थे: यह भविष्यवक्ता यशायाह के माध्यम से कही गई बात को पूरा करने के लिए था: “उसने हमारी दुर्बलताओं को दूर कर लिया और हमारी बीमारियों को सहन कर लिया” (मत्ती ८:१७)। यशायाह ५३ का यह अंश अभी भी मेशियाच (सैन्हेद्रिन ९८ए) के आगमन पर कई रब्बी टिप्पणियों में लागू किया जाता है। हमारा उद्धारकर्ता आज भी चंगा करता है, लेकिन अपनी संप्रभु इच्छा के परिणाम के रूप में, हमारी मांगों के कारण नहीं।

रोगों के लिए यशायाह ५३ का हिब्रू शारीरिक और आध्यात्मिक उपचार दोनों की अनुमति देता है। निस्संदेह, यीशु का सबसे महत्वपूर्ण कार्य हमारे पापों को दोषबलि के रूप में दूर करना होगा (यशायाह ५३:११)। हमें याद रखना चाहिए कि अनुग्रह के वितरण के दौरान मसीहा के प्रायश्चित में शारीरिक उपचार की गारंटी नहीं है (इब्रानियों Bp – अनुग्रह का समय पर मेरी टिप्पणी देखें)। मसीह हमारे पापों के लिए मर गया, फिर भी विश्वासी अभी भी पाप में गिरते हैं; उसने दर्द और बीमारी पर विजय पा ली, लेकिन उसके लोग अभी भी पीड़ित और बीमार हो गए; उन्होंने मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली, लेकिन उनके अनुयायी अभी भी मरते हैं। बाइबल में और ईश्वरीय विश्वासियों के आधुनिक जीवन में अवास्तविक उपचारों के बहुत सारे उदाहरण हैं (दूसरा

Cl – शमौन की सास तेज़ बुखार के कारण बिस्तर पर थीं मत्ती
८:१४-१७; मरकुस १:२९-३४; लूका ४:३८-४१ | 4

कुरिन्थियों १२:१-१०)। इसमें कुछ रहस्य है कि परमेश्वर हमेशा हर मामले में ठीक क्यों नहीं होते हैं, फिर भी स्पष्ट रूप से वह अपने बच्चों को अलग-अलग सबक सिखाने के लिए कई बार इन मामलों का उपयोग करते हैं। फिर भी, एक दिन आएगा जब यीशु के कार्य का भौतिक पहलू उन सभी को पूरी तरह से महसूस होगा जो उसका नाम पुकारते हैं, वह उनकी आंखों से हर आंसू पोंछ देगा। फिर न मृत्यु, न शोक, न रोना, न पीड़ा रहेगी, क्योंकि पुरानी व्यवस्था मिट गई है (प्रकाशितवाक्य २१:४)।

जो लोग दावा करते हैं कि प्रायश्चित में उपचार के कारण विश्वासियों को कभी बीमार नहीं होना चाहिए, उन्हें यह भी दावा करना चाहिए कि विश्वासियों को कभी मरना नहीं चाहिए, क्योंकि यीशु ने भी प्रायश्चित में मृत्यु पर विजय प्राप्त की थी। सुसमाचार में केंद्रीय संदेश पाप से मुक्ति है। यह स्वास्थ्य के बारे में नहीं, क्षमा के बारे में अच्छी खबर है। अभिषिक्त व्यक्ति पाप बनाया गया था, बीमारी नहीं, और वह हमारे पाप के लिए क्रूस पर मरा, हमारी बीमारी के लिए नहीं। जैसा कि पतरस ने स्पष्ट किया है जब उसने लिखा: उसने स्वयं हमारे पापों को अपने शरीर पर क्रूस पर ले लिया, ताकि हम पापों के लिए मर सकें और धार्मिकता के लिए जी सकें, “उसके घावों से तुम चंगे हो गए” (प्रथम पतरस २:२४)।

इसके अलावा, कई लोगों में से दुष्टात्माएँ यह चिल्लाते हुए निकलीं, “तुम परमेश्वर के पुत्र हो!” परन्तु उसने उनका मुँह दबा दिया और उन्हें बोलने नहीं दिया, क्योंकि वे जानते थे कि वह मसीहा है (मरकुस १:३४बी; लूका ४:४१)। उसने अपने चमत्कारों का प्रमाण तौलने वालों को उसे अस्वीकार करने का अवसर नहीं दिया क्योंकि गवाही ऐसे संदिग्ध स्रोतों से आई थी। इसलिए, वह राक्षसों को अपनी ओर से गवाही देने की अनुमति नहीं देगा।

ध्यान दें कि सभी बीमार ठीक हो गए। लेकिन वहाँ त्रासदी की शुरुआत थी। हालाँकि, भीड़ आई, वे इसलिए आई, क्योंकि वे येशुआ से कुछ चाहते थे। वे इसलिये नहीं आये कि वे उससे प्रेम करते थे; वे इसलिए नहीं आए क्योंकि उन्होंने उसके देवता की एक झलक देखी थी; अंतिम विश्लेषण में वे उसे नहीं चाहते थे – वे वही चाहते थे जो वह उनके लिए कर सकता था।

वास्तव में यह उतना असामान्य नहीं था (या नहीं है)। समृद्धि के दिनों में हाशेम तक जाने वाली एक प्रार्थना के लिए – विपत्ति के समय में दस हजार लोग ऊपर जाते हैं। बहुत से लोग जिन्होंने कभी प्रार्थना नहीं की, जब जीवन का सूर्य चमक रहा था, ठंडी हवाएँ आने पर उत्साहपूर्वक प्रार्थना करने लगते हैं। किसी ने कहा है कि बहुत से लोग धर्म को “एम्बुलेंस कोर से संबंधित मानते हैं, न कि जीवन की अग्नि-लिंग से।” उनके लिए धर्म केवल संकट प्रबंधन है। केवल जब उनका जीवन बर्बाद हो जाता है तब वे परमेश्वर को याद करते हैं।

हमें यीशु के पास जाना हमेशा याद रखना चाहिए, क्योंकि केवल वह ही हमें जीवन के

Cl – शमौन की सास तेज़ बुखार के कारण बिस्तर पर थीं मत्ती
८:१४-१७; मरकुस १:२९-३४; लूका ४:३८-४१ | 5

लिए आवश्यक चीजें दे सकता है, भले ही हमें उत्तर समझ में न आए। चाहे परिस्थितियां कैसी भी हों, हमें परमेश्वर की अच्छाई में अय्यूब का अटूट भरोसा रखना होगा। उसने कहा: भले ही परमेश्वर मुझे मार डाले, मैं उस पर आशा रखता रहूंगा (अय्यूब १३:१५ए)। अपने बच्चों के रूप में, परमेश्वर के परिवार में गोद लिए जाने के बाद, वह हमेशा हमारे सर्वोत्तम हितों की तलाश में रहते हैं’ जैसा कि कोई भी प्यार करने वाला पिता चाहता है। लेकिन यहोवा दुर्भाग्य के दिन इस्तेमाल किया जाने वाला व्यक्ति नहीं है; वह ऐसा व्यक्ति है जिसे हमारे जीवन में हर दिन प्यार किया जाता है और याद किया जाता है।